IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दिनकर के काव्य में ऐतिहासिकता का समावेश

डॉ. संगीता रंगारी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

वीरांगना रानी अवन्ती बाई लोधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रामाटोला

जिला – राजनांदगांव (छ.ग.)

शोधसार – रामधारी सिंह दिनकर ने अपने ओजस्वी काव्य से हिंदी साहित्य को चिंतन और मनन हेतु विपुल भंडार प्रदान किए हैं। दिनकर जी अपने जीवन काल में अपनी काव्य साधना के कारण पर्याप्त गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है चुंकि दिनकर जी इतिहास के छात्र रहे हैं। यही कारण है कि उनकी ऐतिहासिक चेतना अत्यंत प्रखर रही है। साहित्य में इतिहास का प्रयोग कई बार हुआ है। इनका इतिहास काव्य में अपनी गाँठ खोलता हुआ ज्ञात होता है। यद्यपि कवि की कल्पना इतिहास के भग्न खंडहरों में भटकती है, फिरती रही है, किंतु वह अतीत की ओर जब जाति है तब वह उसे अपने कंधों पर बैठाता है।

प्रस्तावना – इतिहास अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध, तथ्यसंगत अध्ययन है। यह समय के अनुसार अंकित चित्रकथा है। इसमें पूर्णतः वास्तविकता और सभ्यता का प्रयोग होता है, लेकिन मानव इतिहास की संरचना में कल्पना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक जाति का इतिहास उसकी दन्तकथाओं में छिपा होता है। दंतकथाओं में छिपे इतिहास सम्बन्धी मौखिक रूप से अर्थात केवल सुनकर ही आगे बढ़ते है। उन्हें जब क्रमबद्ध रूप में पिरोकर प्रस्तुत करते है, तो वे ही इतिहास के रूप में परिणत हो जाते है।

अतीत प्रत्येक देश की वह सम्पत्ति है, जिसके सहारे वर्तमान को सम्पन्न एवं सफल बनाया जा सकता है। देश की नदियाँ, पहाड़, वन–उपवन आदि प्राकृतिक वस्तुएँ तथा उनकी भूमि के कण–कण के साथ अतीत–गौरव की अनगिनत समृतियाँ जुड़ी रहती है। जब कभी भी वर्तमान अंधकार से ढक जाता है, तब अतीत ही उसे प्रकाशित करता है। देश में राष्ट्रीय चेतना जगाकर उसे अपने कर्तव्य की ओर प्रेरित करने के लिए अतीत का गौरवगान अत्यंत प्रभावकारी साधन है। अतीत के वैभव एवं गौरव की स्मृति परतंत्र देश की दासता को तोड़ने की प्रेरणा देती है। उसके कारण गौरवशाली भविष्य के निर्माण की उम्मीद की जा सकती है। हिन्दी काव्य में इसलिये अतीत के गौरवगान को स्थान दिया गया है। भारत का अतीत गौरवशाली घटनाओं एवं महापुरूषों के महत्वपूर्ण कार्यो से समन्वित है। भारतवर्ष का

प्राचीन गौरव अब भी कुछ देर के लिये हमारे हृदय को गौरवान्वित कर देता है। हम अपनी दीन–हीन दशा की तुलना उस समय कर सर्वोच्च अवस्था से करते है और गहरी विषमता पाकर हमारे हृदय में विषाद की सृष्टि होती है। यह विषाद हमें निश्चेष्ट न बनाकर इस विषमता को दूर करने में प्रयत्नशील बना देता है। कोई भी सच्चा राष्ट्रकवि अपने देश के अतीत एवं इतिहास से मुख नहीं मोड़ सकता। भारत का अतीत वैभवशाली एवं समृद्ध रहा है। दिनकर के मन में भारत के उज्जवल अतीत के प्रति अत्यधिक प्रेम एवं अटूट श्रद्धा रही है। कवि का यह मानना है – "प्रत्येक युग अपनी आग में परम्परागत इतिहास को खौलाता है। और भविष्य की ओर लपटे फेंकता है।"[1] देश की लम्बी दासता, गरीबी और विदेशी शासकों के अत्याचारों से आहत, अपमानित भारतीय जनता की मनोदशा को दृष्टि में रखते हुए देश के गौरवमय इतिहास पर कवि ने ध्यान दिया। भारत के उज्जवल इतिहास के गौरवमय अतीत को वाणी प्रदान करना कवि के राष्ट्रीयता की प्रमख विशेषता है। इसकी अभिव्यक्ति इन्होने अपनी अनेक रचनाओं में की है। उन्होने अपने काव्य में अतीत को आधार बनाने का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए स्वयं कहा है – "पीछे हटकर बाण इसलिए फेकता हूँ कि वर्तमान कम्पित हो उठे या अपने युग का दीपक जलाने के लिए अतीत से तेल लाता हूँ।"[2] वास्तव में इतिहास की विस्मृत घटनाओं की पृष्ठभूमि में कवि दिनकर ने वर्तमान की पीड़ा को प्रभावपूर्ण रूप से प्रकट किया है। दिनकर की रेणुका, हुंकार, सामधेनी, इतिहास के आँसू, दिल्ली आदि रचनाओं में उनका अतीत–प्रेम झलकता है। देश की वर्तमान दशा से व्यथित कवि–हृदय को अतीत के चिंतन–अवलोकन से पर्याप्त दिलासा एव स्फूर्ति प्राप्त हुई। कवि ने अपने काव्य में बुद्ध, महावीर, अशोक, चन्द्रगुप्त, राणा प्रताप, शिवाजी, दुर्गादास, लक्ष्मीबाई, भगतसिंह, असफाक, इत्यादि ऐतिहासिक चरित्रों को आधार बनाया है और उनके बहाने उनके समय की ऐतिहासिक स्थिति का अंकन किया है।

सहित्य के सहृदय कवि देश के उज्ज्वल अतीत के गौरव को आहत देखकर शोक से व्याकुल हो जाते है, लेकिन हताश नहीं होते, बल्कि यह शोक उन्हें नया ओज, नया तेज तथा नयी स्फूर्ति प्रदत्त करता है। इससे कवि की क्रांन्तिकारी वाणी एवं राष्ट्रीय चेतना जागृत हो जाती है। कवि को देश की धरती पुत्रों से भी प्रेम था तथा देश के प्रति अपना सब कुछ समर्पित करने वाले महापुरूषों के प्रति अपार श्रद्धा भी थी। दिनकर ने अपनी कविताओं में गांधीजी, राजेन्द्रप्रसाद, पं. जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे आदि नेताओं के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की है। रेणुका के मंगल–आह्वान अंश में कवि ने काव्य सृजन के लिए अतीत से प्रेरणा ग्रहण करना चाहा –

प्रिय दर्शन–इतिहास कंठ में, आज ध्वनित हो काव्य बने
वर्तमान की चित्रपटी पर, भूतकाल सम्भाव्य बने।[3]

मिथिला भूमि को उजड़ी देखकर वह अशोक और चंद्रगुप्त के समय के वैभव को याद करते हैं। कवि गंगा से अतीत के गौरवशाली महापुरुषों की गाथाएँ पूछते हैं। वे समुद्रगुप्त को याद करते हैं, जिसने दुश्मनी से रंगी तलवार अनेक बार गंगा के जल से धोया था। एक युग था जब यूनान ने मस्तक

झुकाकर भारत को अपनी पुत्री अर्पित की थी और आज वही यश आज कहीं छुप कर रोती हुई दिखाई देती है। कई क्रांति को जागृत करने की प्रेरणा भी इतिहास प्रसिद्ध विभूतियों– भूषण एवं लेनिन से प्राप्त करते हैं।

दिनकर जी के इतिहास का आधार कवि की मुक्तक रचनाओं में भी प्राप्त होता है रेणुका, हुँकार, सामधेनी, इतिहास के आँसू, दिल्ली आदि संकलनों में अतीत का गौरवगान एवं इतिहास की स्मृति है। ऐतिहासिक पात्रों के जीवन की घटनाओं का उल्लेख उन्होंने लोगों को प्रेरणा देने के लिए किया है। कलिंग विजय के नायक अशोक है। इसमें कवि ने अशोक के युद्ध से विनाश होने वाला पक्ष को प्रस्तुत किया है। और अशोक के मन को परिवर्तित कर विश्व शांति की स्थापना की। "इतिहास के आंसू" में "मगध महिमा" के अंतर्गत कवि ने बिखरे हुए वैभव का अनूठे ढंग से चित्रण किया है। वैशाली तथा बसंत के नाम पर शीर्षक कविताओं में भारत के गौरवशाली अतीत का गान किया गया है। बसंत के नाम पर कविता में कवि प्रकृति का मधुर गान करना चाहते हैं लेकिन महाराणा प्रताप और दुर्गादास विहीन राजस्थान को याद करते हैं तो उनकी लेखनी रुकसी जाती है –

देखा शून्य कुँवर का गढ़ है, झाँसी की वह शान नहीं है
दुर्गादास, प्रताप बली का प्यारा राजस्थान नहीं है
जलती नहीं चिता जौहर की, मुट्ठी में बलिदान नहीं है
टेढ़ी मूँछ लिए वन वन फिरना अब तो आसान नहीं है। 4

वे विचार करते है कि शत्रुओं का नाश करने वाले वीरों के पास ना भोजन बनाने का समय था और ना ही भोजन करने का समय था। राजस्थान की मिट्टी वीरो का तिलक करने वाले मिट्टी थी। तभी तो कभी दिनकर राजस्थान के इतिहास की ओर आकृष्ट हुए। दिनकर कवि मेवाड़ के मतवालों को याद करते हैं तथा ऐतिहासिक वीरों की वीरता व समस्याओं का वर्णन करते हुए भी समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का स्मरण करते है। यह कवि की निम्न पंक्तियों के द्वारा स्पष्ट हो जाता है –

समय माँगता मूल्य, मुक्ति का देगा कौन माँस की बोटी
पर्वत पर आदर्श मिलेगा, खाये चलो घास की रोटी।
चढ़ अश्व पर सेंक रहे रोटी, नीचे कर भालों को,
खोज रहा मेवाड़ आज फिर, उन अल्हड़ मतवालों को। 5

दिनकर कवि देश का इतिहास गाड़ने वालों को बारंबार प्रणाम करते है, जिन्होंने समय की मार सही है। और जिनके पास खाने के लिए घास की रोटी भी नहीं है लेकिन उन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ अर्पण किया। ऐसे वीर बलिदानीयों को कभी प्रणाम करने के लिए कहते हैं कि –

नमन उन्हे मेरा शत् बार।
सूख रही बोटी–बोटी मिलती नहीं घास की रोटी,
गढ़ते हैं इतिहास देश को, सहकर कठिन क्षुधा की मार।

नमन उन्हें मेरा शत् बार। 6

कवि अयोध्या के राम वृन्दावन के कृष्ण के साथ–साथ वैशाली के भग्नावशेष, गण्डकी और गंगा की लहरों तथा विद्यापति के गानों को भी याद करते है –

"वैशाली के भग्नावशेष से पूछ, लिच्छवी–शान कहाँ
ओ री उदास गण्डकी! बता, विद्यापति कवि के गान कहाँ "

परशुराम के प्रतिक्षा के तीसरे खंड में कवि अतीत के महान चरित्र चाणक्य, चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, राणा प्रताप, गुरु गोविंद सिंह, शिवाजी, वीरांगना लक्ष्मीबाई, सुभाष चंद्र बोस, और भगत सिंह का स्मरण करते हैं जिन्होंने देश की रक्षा के लिए तलवार उठाई और अपने प्राण निछावर कर दिये –

"झकझोरो, झकझोरो महान सुप्तो को,
टेरो, टेरो चाणक्य–चन्द्रगुप्तों को,
विक्रमी तेज, असि की उद्दाम प्रभा को,
राणाप्रताप, गोविन्द, शिवा सरजा को,
वैराग्य वीर, बन्दा फकीर भाई को,
टेरो, टेरो माता लक्ष्मीबाई को।" 7

परशुराम के प्रतीक्षा कविता में भारतवासी वीर संतान के रूप में परशुराम के प्रतिनिधि के रूप में हैं। यह कविता वीर रस से परिपूर्ण है। इसमें इतिहास की पृष्ठभूमि ने प्राण प्रतिष्ठा की है। यह कृति वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य में इतिहास बनकर हमारी भावी संतानों को प्रेरणा देगी की राष्ट्रीय अपमान से निराश होकर देश किस प्रकार गरज उठा। कवि नदी एवं स्थान में गंगा, जमुना, नर्मदा, यमुना के तट कृष्ण की कछार कावेरी को तथा चित्तौड़ और सिंहगढ़ को याद करते हुए कहते हैं कि ये हमारी भारतीय संस्कृति के गौरव के प्रतीक है।

"खँडहरों, भग्न कोटों में प्रचीरों में,
जह्नवी, नर्मदा, यमुना के तीरों में,
कृष्णा–कछार में कावेरी कुलों में
चित्तौड़–सिंहगढ़ के समीप धूलों में
सोये हैं जो रणबली, उन्हें टेरो रे
नूतन पर अपनी शिखा रे।"

रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं कि पाप मुक्ति के लिए परशुराम का जन्म हो चुका है। उन्होंने परशुराम में गांधी, गौतम, शंकर जी के गुणों को देखा है और निर्द्वन्द्व भाव से घोषणा की, कि इस प्रकार के व्यक्ति देश का भाग्य लेकर ही धरती पर आते हैं–

"गांधी गौतम का त्याग लिए आता है, शंकर का शुद्ध विराग लिये आता है
सच है आँखों में आग लिए आता है परं यह स्वदेश का भाग लिये आता है"

उन्होंने अपनी बापू शीर्षक रचना में राष्ट्रपिता गाँधी को रामकृष्ण, ईसा और गौतम जैसा माना है, तथा भारत के भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए कवि बापू को बार–बार पुकार रहे है –

"यह अवधपुरी के राम चले, वृंदावन के घनश्याम चले
शूली पर चढ़कर चले खष्ट गौतम प्रबुद्ध निष्काम चले"

शोध का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में ऐतिहासिकता पर विहंगम दृष्टि डालना है।

शोध विधि – शोध पत्र में पुस्तकालयीन में पद्धती का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष – दिनकर कवि ने इतिहास का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। इतिहास से इतिहास की घटनाओं से दिशा प्राप्त किया है और ऐतिहासिक कथा एवं विभिन्न पात्रों को माध्यम बनाकर देश की वर्तमान समस्याओं के बारे में बताया है। जैसे कुरुक्षेत्र में केवल महाभारत की कथा नहीं है बल्कि उसे कथा के माध्यम से भारतीय जनता को वीर योद्धा बनाने का संदेश दिया है तथा उसके कर्तव्यों का अनुकरण करने देश में सुधार लाने के लिए कहा है। कई ऐतिहासिक पात्रों को याद करते हुए उनके गुण अपने के लिए कहते हैं परशुराम की प्रतीक्षा में केवल परशुराम की कथा ना कह कर देशवासियों को परशुराम की तरह कुशल योग्य वीर पुरुष बनाने के लिए कहते हैं, जो देश का उद्धार कर सके रश्मिरथी में कर्ण के साथ हुए उच्च नीच के व्यवहार को वर्तमान समाज में समाज की ऐसी बुराइयों को दूर करने का संदेश देते हैं इतिहासकार वर्तमान दृष्टि की प्रेरणा से ही अतीत का पुनरावलोकन कर पुनः सृजन करता है तथा ऐतिहासिक तत्वों को खंगालता है और उनका परिक्षण करता है तथा निष्कर्ष देता है, इस तरह वह हमेशा परीक्षक की भूमिका में होता है। दिनकर ने अपनी समृद्ध रचनाओं में एतिहासिकता का बखुबी वर्णन किया है।

संदर्भ –

1. दिनकर, रामधारी सिंह, मिट्टी की ओर, उदयाचल प्रकाशन पटना, प्र. सं. 1946 पृ. 60।
2. दीक्षित, डॉ. छोटेलाल, रेणुका, दिनकर का रचना संसार, प्रतिभा प्रकाशन इलाहाबाद, 1976, पृ 3।
3. दिनकर, रामधारी सिंह, रेणुका, मिट्टी की ओर, उदयाचल प्रकाशन पटना
4. दिनकर, रामधारी सिंह, हुँकार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन 2007
5. वही पृष्ठ क्र. 52.
6. दिनकर, रामधारी सिंह, परशुराम की प्रतीक्षा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
7. दिनकर, रामधारी सिंह, बापू, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
   नवम् संस्करण सन 2004